

---

# Shakti-Gitika

---

## शक्ति-गीतिका

---

### Document Information



---

Text title : Shakti Gitika  
File name : shaktiGitika.itx  
Category : devii, sanskritgeet, durgA, hkmeher  
Location : doc\_devii  
Author : Harekrishna Meher meher.hk at gmail.com  
Transliterated by : Harekrishna Meher  
Proofread by : Harekrishna Meher  
Description/comments : Matrigitikanjalih  
Acknowledge-Permission: Dr. Harekrishna Meher  
Latest update : October 22, 2023  
Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---


Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

October 22, 2023

*sanskritdocuments.org*

---



शक्ति-गीतिका



जय जय दुर्गे ! त्वं दुर्गति-निवारिणी ।

महोज्ज्वला, गौरी विमला,

त्रिगुणमयी मङ्गल-तरङ्गिणी ।

दुर्गे ! त्वं दुर्गति-निवारिणी ॥ (ध्रुवम्) ॥

मात-र्जगतां त्वां सर्वगतां पश्यामि सदा,

त्वं शर्वाणी त्वं श्री-र्वाणी सुखदा वरदा ।

विमोहिनी, महिष-मर्दिनी,

हर मान्द्यं मृगेन्द्र-विहारिणी ।

जय जय दुर्गे ! त्वं दुर्गति-निवारिणी ॥ १ ॥

आद्या शक्तिः शरण-रक्षणी सरसिजेक्षणा,

नारायणि हे ! त्वं भय-हरणी शुभ-विभूषणा ।

सुहासिनी, दुष्ट-शासिनी,

भव शिवदा कुविदां विदारिणी ।

जय जय दुर्गे ! त्वं दुर्गति-निवारिणी ॥ २ ॥

त्वं हरि-माया रम्या परमा रण-रुद्राणी,

खण्डित-पापा चण्डिका सती जन-कल्याणी ।

जनय त्वम्, हृदि देवत्वम्,

भव भवानि ! दानव-निर्वर्हिणी ।

जय जय दुर्गे ! त्वं दुर्गति-निवारिणी ॥ ३ ॥

तमसां हन्त्री त्वं गायत्री भद्रकालिका,

दह कुकर्माणि माणिकेश्वरी विश्व-पालिका ।

त्रिशूलिनी, शौर्यशालिनी,

त्वं श्रद्धा शिवार्द्ध-शरीरिणी ।

जय जय दुर्गे ! त्वं दुर्गति-निवारिणी ॥ ४ ॥

कात्यायनि हे ! भक्त्या नियतं त्वं सुपूजिता,  
असि पराम्बिका सम्बलेश्वरी चापराजिता ।  
हैमवती, त्वं विभास्वती,  
भव सुरसा महसां प्रसारिणी ।  
जय जय दुर्गे ! त्वं दुर्गति-निवारिणी ॥ ५ ॥  
अघ-परिवारं विषमाकारं जहि दुर्वारम्,  
नाशय दैन्यं दुर्दिन-जन्यं हर कलिभारम् ।  
धृतायुधा, त्वं ज्ञान-सुधा,  
भव सिद्धा वसुधा-सुधारिणी ।  
जय जय दुर्गे ! त्वं दुर्गति-निवारिणी ॥ ६ ॥  
सत्य-सुन्दरं कुरु सुनन्दितं भुवनं सकलम्,  
स्थापय शान्तिं प्रापय कान्तिं वितरात्मबलम् ।  
नमोऽस्तु ते, भव जगत्कृते,  
अयि मातः ! करुणा-सुवर्षिणी ॥  
जय जय दुर्गे ! त्वं दुर्गति-निवारिणी ॥ ७ ॥  
- गीत-रचना : डॉ हरेकृष्ण-मेहेरः  
(मातृगीतिकाञ्जलिः-काव्यतः)

Copyright Dr.Harekrishna Meher

---



*Shakti-Gitika*

pdf was typeset on October 22, 2023



Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

